

Padma Bhushan



SARDAR TARLOCHAN SINGH

Sardar Tarlochan Singh is a former Member of Parliament. He represented Haryana in Rajya Sabha from 2004 to 2010. Serving as Public Relations Officer (PRO), Bhakra Nangal Project, he escorted a large number of Head of States, foreign dignitaries and even Prime Minister Shri Jawahar Lal Nehru. He later joined Punjab MARKFED in 1970, got trained in East Germany on managing Harvesting Combines, introduced during Green Revolution.

2. Born on 28th July, 1933 in village Dhudial (Dist. Chakwal), now in Pakistan, Sardar Tarlochan Singh had migrated to Patiala in 1947 as refugee with his penniless parents. He had to work hard as a child to fund his school and college education. After completing MA in Economics from Mahendra College, Patiala, Punjab University, he joined the Punjab Government for a multi-dimensional career as its Public Relations Officer in 1957.

3. As the Head of the newly created Department of Culture, Tourism & Archaeology of Punjab Govt. in 1980, Sardar Tarlochan Singh set up several historic and religious museums - Shaheed Bhagat Singh Museum at Khatkar Kalan, Maharaja Ranjit Singh Museum in Ram Bagh at Amritsar, Guru Tegh Bahadur Museum at Anandpur Sahab and Sikh War Museum at Ferozshah. He was the Organizing Secretary of Guru Gobind Singh Marg Committee when historic three days Yatra was taken from Anandpur Sahab to Damdama Sahab. He got the first ever Sikh 12-pages historic colour calendar published in 1971. He has also authored 5 books and is a sought-after speaker on religious and public affairs, at seminars across the world.

4. Sardar Tarlochan Singh remained Vice President of Indian Olympic Association for 20 years and acting President Archery Association & Boxing Federation of India. He was also the Chairman of Publicity Committee of Commonwealth Games, 2010. Sardar Tarlochan Singh has been the Press Secretary to President Giani Zail Singh during the turbulent post-Operation Bluestar period. His communication skills, strategies, presence of mind and above all, an excellent rapport with Press Corps, ensured President never received bad press.

5. As Chairman & Managing Director, Delhi Tourism Development Corporation Sardar Tarlochan Singh built Delhi Haat, an International tourist attraction, the Hauz Khas Tourist Complex, and several events he started which are popular annual shows like Mango Festival, Garden Festival, and Qutub Cultural Festival. Delhi Tourism got two International PATA Gold awards. He also served as Adviser, Tourism Govt. of India for 2 years.

6. Sardar Tarlochan Singh was appointed Vice Chairman, National Commission for Minorities in 2000 and as Chairman in 2003, by the then Prime Minister Shri Atal Bihari Vajpayee. He was also made a member of the National Human Rights Commission. He organised for the first time, inter-faith meetings which were attended by the highest spiritual and temporal gurus of different religious beliefs. He was also a part of the high-powered delegation of Prime Minister Shri Vajpayee on the historic Bus Yatra to Lahore in Pakistan. Elected to the Rajya Sabha from Haryana in 2004, he became the voice of Sikhs and other minorities. Enactment of Anand Marriage Act 2012 for the Sikhs was one of his achievements, and he is known for helping Afghanistan Hindus and Sikhs. He also represented India at the World Parliamentary Conference in Ethiopia in 2009. He is a Member Jalianwala Bagh Trust, Patron of International Punjabi Society, World Punjabi Organization, Kamagata Maru Trust, Kolkata, International Sikh Art & Film Society, New York and Chairman Guru Tegh Bahadur Khalsa College, New Delhi.

7. Sardar Tarlochan Singh has received various awards and honours including Asiad Vishisht Jyoti Award by President of India for his performance as Director, Information and Publicity 9th Asian Games 1982, New Delhi.



सरदार तरलोचन सिंह

सरदार तरलोचन सिंह पूर्व सांसद हैं। उन्होंने 2004 से 2010 तक राज्यसभा में हरियाणा का प्रतिनिधित्व किया। भाखड़ा नंगल परियोजना के जनसंपर्क अधिकारी के रूप में उन्होंने बड़ी संख्या में राष्ट्राध्यक्षों, विदेशी गणमान्य व्यक्तियों और प्रधानमंत्री श्री जवाहर लाल नेहरू तक को एस्कॉर्ट सेवाएं प्रदान की। बाद में, 1970 में उन्होंने पंजाब मार्कफेड में कार्यभार संभाला और हरित क्रांति के दौरान शुरू किए गए हारवेस्टिंग कम्बाइंस के प्रबंधन पर पूर्वी जर्मनी में प्रशिक्षण प्राप्त किया।

2. तत्कालीन पाकिस्तान के गांव दूधियाल (जिला चकवाल) में 28 जुलाई, 1933 को जन्मे सरदार तरलोचन सिंह 1947 में शरणार्थी के रूप में खाली हाथ अपने माता-पिता के साथ पटियाला आ गए। उन्हें एक बच्चे के तौर पर, स्कूल और कॉलेज की शिक्षा के लिए कड़ी मेहनत करनी पड़ी। पंजाब यूनिवर्सिटी के पटियाला के महेंद्र कॉलेज से इकोनॉमिक्स में एम.ए. करने के बाद, वह 1957 में जनसम्पर्क अधिकारी के रूप में अपने बहुआयामी करियर के लिए पंजाब सरकार में नौकरी करने लगे।

3. 1980 में पंजाब सरकार के नवनिर्मित संस्कृति, पर्यटन और पुरातत्व विभाग के प्रमुख के रूप में, सरदार तरलोचन सिंह ने कई ऐतिहासिक और धार्मिक संग्रहालयों की स्थापना की जैसे खटकड़ कला में शहीद भगत सिंह संग्रहालय, अमृतसर के राम बाग में महाराजा रणजीत सिंह संग्रहालय, आनंदपुर साहब में गुरु तेग बहादुर संग्रहालय और फिरोजशाह में सिख युद्ध संग्रहालय। वह, आनंदपुर साहब से दमदमा साहिब तक की ऐतिहासिक तीन दिवसीय यात्रा के दौरान गुरु गोबिंद सिंह मार्ग समिति के आयोजन सचिव थे। उन्हें पहली बार 1971 में प्रकाशित 12 पृष्ठ का ऐतिहासिक रंग का सिख कैलेंडर प्रदान किया गया था। उन्होंने 5 पुस्तकें भी लिखी हैं और वह दुनिया भर के सेमिनारों में धार्मिक और सार्वजनिक मामलों पर एक प्रसिद्ध वक्ता हैं।

4. सरदार तरलोचन सिंह 20 वर्ष तक भारतीय ओलंपिक संघ के उपाध्यक्ष और भारतीय तीरंदाजी और मुक्केबाजी संघ के कार्यवाहक अध्यक्ष रहे। वह राष्ट्रमंडल खेल, 2010 की प्रचार समिति के अध्यक्ष भी रहे। सरदार तरलोचन सिंह ऑपरेशन ब्लूस्टार के बाद के अशांति काल में राष्ट्रपति श्री ज्ञानी जैल सिंह के प्रेस सचिव रहे हैं। उनका सम्प्रेषण कौशल, कार्यनीतियों, हाजिरजवाबी और इन सबसे बढ़कर, प्रेस कोर के साथ बढ़िया तालमेल रहा जिसकी वजह से राष्ट्रपति को कभी भी प्रेस की नकारात्मक प्रतिक्रिया का सामना नहीं करना पड़ा।

5. दिल्ली पर्यटन विकास निगम के अध्यक्ष और प्रबंध निदेशक के रूप में सरदार तरलोचन सिंह ने अंतरराष्ट्रीय पर्यटकों के लिए आकर्षण स्थल दिल्ली हाट, और होज खास पर्यटक परिसर का निर्माण किया। उन्होंने ऐसे अनेक कार्यक्रम शुरू किए जिनमें आम महोत्सव, उद्यान महोत्सव और कुतुब सांस्कृतिक महोत्सव जैसे लोकप्रिय वार्षिक शो शामिल हैं। दिल्ली पर्यटन को दो अंतरराष्ट्रीय पाटा गोल्ड अवार्ड प्राप्त हुए। उन्होंने दो वर्ष तक भारत सरकार के पर्यटन सलाहकार के रूप में भी कार्य किया।

6. सरदार तरलोचन सिंह को तत्कालीन प्रधानमंत्री श्री अटल बिहारी वाजपेयी द्वारा 2000 में राष्ट्रीय अल्पसंख्यक आयोग का उपाध्यक्ष और 2003 में अध्यक्ष नियुक्त किया गया था। उन्हें राष्ट्रीय मानवाधिकार आयोग का सदस्य भी बनाया गया था। उन्होंने पहली बार विभिन्न पंथों की बैठकों का आयोजन किया जिसमें अनेक पंथों के सर्वोच्च आध्यात्मिक और पंथनिरपेक्ष गुरुओं ने भाग लिया। वह पाकिस्तान की ऐतिहासिक लाहौर बस यात्रा पर प्रधानमंत्री वाजपेयी के उच्चस्तरीय प्रतिनिधिमंडल का भी हिस्सा थे। 2004 में हरियाणा से राज्यसभा के लिए चुने जाने पर वह सिखों और अन्य अल्पसंख्यकों की आवाज बन गए। सिखों के लिए आनंद विवाह अधिनियम, 2012 लागू करना उनकी उपलब्धियों में से एक था, और वह अफगानिस्तान के हिंदुओं और सिखों की मदद करने के लिए भी जाने जाते हैं। उन्होंने 2009 में इथियोपिया में विश्व संसदीय सम्मेलन में भी भारत का प्रतिनिधित्व किया था। वह जलियांवाला बाग ट्रस्ट के सदस्य, अंतरराष्ट्रीय पंजाबी सोसायटी, विश्व पंजाबी संगठन, कामागाटा मारु ट्रस्ट, कोलकाता, इंटरनेशनल सिख आर्ट एंड फिल्म सोसायटी, न्यूयॉर्क के संरक्षक और गुरु तेग बहादुर खालसा कॉलेज, नई दिल्ली के अध्यक्ष हैं।

7. सरदार तरलोचन सिंह को विभिन्न पुरस्कार और सम्मान प्राप्त हुए हैं जिनमें नई दिल्ली में आयोजित नौवें एशियाई खेल, 1982 के दौरान निदेशक, सूचना और प्रचार के रूप में उनके प्रदर्शन के लिए भारत के राष्ट्रपति द्वारा प्रदान किया गया एशियाड विशिष्ट ज्योति पुरस्कार शामिल है।